शुभ 卐 ॥ श्री ॥ ॐ लाभ

श्रीराम स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन कंज-मुख कर, कंज पद कंजारुणम्।।

कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील-नीरज-सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनकसुतावरम्।।

भज दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनन्द आनन्द कन्द कौशल, चन्द्र दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खर-दूषणम्।।

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादी-खल-दल-गंजनम्।।

मन जाहि राचेऊ मिलहिं सो वर, सहज सुन्दर साँवरो।
करुणा निधान सुजान शील, सनेहू जानत रावरो।।

एहि भाँति गौरी असीस सुनी सिय, सहित हिय हर्षि अली।
तुलसी भवानी पूजि पुनि पुनि, मुदित मन मन्दिर चली।।

ARCHITACCURATE® – दोहा – www.architaccurate.com

जानि गौरी अनुकूल सिय, हिय हर्ष न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल वाम, अंग फरकन लगे।।

सियावर रामचन्द्र जी की जय शरणम्

।। मंगल भवन अमंगल हारी, द्रवहु सुदसरथ अचर बिहारी ।।